भारतीय कृषि सांख्यिकी संसद्

(हिन्दी परिशिष्ट)

खंड २३] जून १९७१ [अंक १

अनुक्रमणिका

सह-प्रसरण विश्लेशण में अज्ञात तथा मिश्रित अवलोकन
(डा० राघवराव तथा हरविशन लाल) iii

आंशिक त्रयी तुलनाओं में श्रेणीकरण
(एस० सी० राय) iii

सन्तुलित अपूर्ण ब्लाक अभिकल्पनाओं की एक श्रेणी
के निर्माण के सम्बन्ध में (बसन्त लाल) iv

पशु गणना अन्तराल में पशु धन संख्याओं के अनुमान
(वी० एन० आम्ले) iv

सह-प्रसरण विश्लेषण में अज्ञात तथा मिश्रित अवलोकन

डा० राघवराव तथा हरविशन लाल

पंजाब कृषि विद्यालय लुधियाना

(प्राप्त हुआ अक्तूबर 1969)

इस लेख में सह-प्रसरण विश्लेषण में अज्ञात तथा मिश्रित अवलोकनों सहित आँकड़ों की विश्लेषण विधियों पर विचार किया गया है।

आंशिक त्रयी तुलनाओं में श्रेणीकरण

एस० सी० राय

कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्था नई दिल्ली

(प्राप्त हुआ मार्च 1970)

इस लेख में पेण्ड्र ग्रास–ब्रेडले मॉडल के विस्तार के रूप में आँशिक त्रयी तुलनाओं में श्रेणीकरण की एक विश्लेषण विधि का विकास किया गया है जिससे सामान्य वर्ग परिकल्पनाओं की जाँच तथा उपचार दरों या पसन्दों का आगणन सम्भव है। एक जाँच विधि का विकास किया गया है जिसमें उपचार प्राचलों सहित एक गणितीय मॉडल प्रस्तावित किया गया है। इन प्राचलों के आगणन तथा मॉडल के गुण अनुसन्धान पर विचार किया गया है।

सन्तुलित अपूर्ण ब्लाक अभिकल्पनाओं की एक श्रेणी के निर्माण के सम्बन्ध में

बसन्त लाल

कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान सस्था, नई दिल्ली

(प्राप्त हुआ मई 1969)

इस लेख में निम्नलिखित प्रकार के प्राचलों वाले सन्तुलित अपूर्ण ब्लाक अभिकल्पनाओं के निर्माण की विधि प्रस्तुत की गई है।

$$v=p+1,\ b=2p,\ k=\frac{p+1}{2}$$

$$r=p,\qquad \gamma=\frac{p+1}{2}$$

जब कि p कोई विषम अभाज्य संख्या अथवा किसी विषम अभाज्य संख्या की कोई शक्ति है।

पशु गणना अन्तराल में पशु धन संख्याओं के अनुमान

वी० एन० आम्ले

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन, नई दिल्ली

तथा

एम० एस० अवधानी

कृषि सांख्यकी अनुसन्धान संस्था, नई दिल्ली

उस स्थिति में जब कि सर्वेक्षणों पर आधारित आँकड़े उपलब्ध न हों, पंचवर्षीय पशु गणना द्वारा उपलब्ध आँकड़ों द्वारा पशु गणना अन्तराल में पशु धन संख्या के अनुमान आसंजन उपनति एवम् अन्तर्वेषण सूत्रों के प्रयोग द्वारा प्राप्त करने की सम्भावना पर विचार किया गया है। आसंजन उपनति विधि अधिक उपयुक्त सिद्ध हुई। पशु संख्या के इस प्रकार प्राप्त किए गए अनुमानों की कमियों पर भी प्रकाश डाला गया है। इस संबंध में प्रतिदर्श सर्वेक्षणों के महत्व पर विचार किया गया है। गत दस वर्षों में पशु उत्पादय सर्वेक्षणों द्वारा उपलब्ध आँकड़ों का पुनर्निरीक्षण किया गया है तथा इस दशा में आगे किए जाने वाले कार्यों की आवश्यकता के सम्बन्ध में ठोस सुझाव दिए गये हैं।